बेरोजगारी : समस्या और समाधान

अन्य टॉपिक पर भी यही निबंध लिख सकते हैं –

☞भारत में बेरोजगारी, बेरोजगारी : कारण एवं निवारण, जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी, बेकारी की समस्या, शिक्षा और रोजगार, शिक्षित बेरोजगारों की समस्या आदि।

रूपरेखा—

- ★ *प्रस्तावना*
- ★ *बेरोजगारी का अर्थ*
- ★ *बेरोजगारी के प्रकार*
- ★ *बेरोजगारी के दुष्परिणाम*
- ★ *बेरोजगारी के कारण*
- ★ *बेरोजगारी दूर करने के उपाय*
- ★ *उपसंहार*

प्रस्तावना— हमारे देश के सामने अनेक समस्याएं मुँह फैलाए खड़ी हैं। इनमें से सर्वाधिक प्रमुख है— बेरोजगारी की समस्या। एक मोटे अनुमान से भारत में बेरोजगारों की संख्या करोड़ों में है। पिछले कई वर्षों में बेरोजगारों की एक फौज ही देश में खड़ी हो गई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त लोगों को यह आशा थी कि देश में सबको रोजगार प्राप्त हो जाएगा, किन्तु यह सम्भव नहीं हो सका और तमाम प्रयासों के बावजूद स्थिति बद से बदतर होती गई। यद्यपि निर्धनता, गन्दगी, रोग, अशिक्षा और बेकारी इन पांच असुरों ने संसार को विनाश की ओर प्रेरित किया है, तथापि बेकारी इनमें सबसे भयानक है।"

Gyansindhu Classes

बेरोजगारी का अर्थ— बेरोजगार उस व्यक्ति को कहा जाता है जो योग्यता रखने पर भी और कार्य की इच्छा रखते हुए भी रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता। शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम होते हुए भी जब योग्य व्यक्ति बेकार रहता है, तो उस स्थिति को बेरोजगार की संज्ञा दी जाती है।

बेरोजगारी के प्रकार — बेरोजगारी दो प्रकार की होती है- स्थायी या अस्थायी। कभी- कभी व्यक्ति जिस प्रकार की योग्यता रखता है, उस प्रकार का काम उसे नहीं मिलता, परिणामतः वह किसी अन्य साधन से जीवन यापन करने लगता है। यह स्थिति भी अर्द्धबेरोजगारी की ही मानी जाती है। कुछ उद्योग-धन्धे सीजनल होते हैं तथा एक विशेष मौसम में ही वहाँ काम होता है। उदाहरण के लिए चीनी उद्योग या आइसक्रीम उद्योग मौसमी उद्योग हैं अतः यहाँ काम करने वाले श्रमिकों को साल में कुछ महीने बेकार रहना पड़ता है।

बेरोजगारी के दुष्परिणाम— जब पढ़े-लिखे युवकों को भी रोजगार नहीं मिलता तो अनपढों की क्या कहें? शिक्षित युवकों की यह बेरोजगारी देश के लिए सर्वाधिक चिन्तनीय है, क्योंकि ऐसे युवक जिस तनाव और अवसाद से गुजरते हैं, उससे उनकी आशाएं टूट जाती हैं और वे गुमराह होकर उग्रवादी, आतंकवादी तक बन जाते हैं। कश्मीर और असम के आतंकवादी संगठनों में कार्यरत उग्रवादियों में अधिकांश इसी प्रकार के शिक्षित बेरोजगार युवक हैं। इससे राष्ट्रीय आय में कमी आती है, उत्पादन घट जाता है और देश में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है। बेरोजगारी से जीवन स्तर गिर जाता है जिसका दुष्प्रभाव परिवार एवं बच्चों पर पड़ता है । बेरोजगारी मानसिक तनाव को जन्म देती है जिससे समाज एवं सरकार के प्रति कटुता के भाव जाग्रत होते हैं।

Gyansindhu Classes

बेरोजगारी के कारण— बेरोजगारी के कारणों का विस्तृत विवेचन निम्न बिंदुओं के आधार पर कर सकते हैं-

1) जनसंख्या का तीव्र विकास— भारत में जनसंख्या में निरंतर वृद्धि एक बड़ी समस्या बन गई है।
2) कृषि का प्रभुत्व—- भारत में अभी भी लगभग आधा कार्यबल कृषि पर निर्भर है। साथ ही यह मौसमी रोज़गार भी प्रदान करती है।
3) कुटीर और लघु उद्योगों का पतन— औद्योगिक विकास का कुटीर और लघु उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कुटीर उद्योगों का उत्पादन गिरने से कई कारीगर बेरोज़गार हो गए।
4) श्रम की गतिहीनता— भारत में श्रम की गतिशीलता कम है। परिवार से लगाव के कारण लोग नौकरी के लिये दूर-दराज़ के इलाकों में नहीं जाते हैं।
5) शिक्षा प्रणाली में दोष— पूंजीवादी दुनिया में नौकरियाँ अत्यधिक विशिष्ट हो गई हैं लेकिन भारत की शिक्षा प्रणाली इन नौकरियों के लिये आवश्यक सही प्रशिक्षण और विशेषज्ञता प्रदान नहीं करती है।

बेरोजगारी दूर करने के उपाय — इस सन्दर्भ में कुछ निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं यथा—

1) जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण — भारत में वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि 2.1 % वार्षिक है जिसे रोकना अत्यावश्यक है। हम दो हमारे दो का युग भी बीत चुका, अब तो 'एक दम्पति एक सन्तान' का नारा ही महत्वपूर्ण होगा।

Gyansindhu Classes

2) विनियोग ढांचे में परिवर्तन — देश में आधारभूत उद्योगों के पर्याप्त विनियोग के पश्चात् उपभोग वस्तुओं से सम्बन्धित उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

3) शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन— शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना आवश्यक है ।

4) कृषि पर आधारित उद्योग-धन्धों का विकास— गांवों में कृषि सहायक उद्योग-धन्धों का विकास किया जाना आवश्यक है। इससे कृषक खाली समय में अनेक कार्य कर सकेंगे। बागवानी, दुग्ध उत्पादन, मत्स्य अथवा मुर्गीपालन, पशुपालन, दुग्ध व्यवसाय, आदि ऐसे ही धन्धे हैं।

5) कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योगों के विकास— कुटीर उद्योग एवं लघु उद्योगों के विकास से ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सुलभ कराए जा सकते हैं।

6) जनशक्ति का उचित नियोजन— आज स्थिति यह है कि एक ओर विशिष्ट प्रकार के दक्ष श्रमिक नहीं मिल रहे हैं तो दूसरे प्रकार के दक्ष श्रमिकों को कार्य नहीं मिल रहा है ।

7) सरकारी योजनाएं— सरकार के द्वारा चलाई जाने वाली अनेक योजनाएँ बेरोजगारी को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। जवाहर रोजगार योजना, नेहरू रोजगार योजना, प्रधानमन्त्री रोजगार योजना, आदि के द्वारा शिक्षितों एवं अर्द्धशिक्षितों को ऋण सुविधा उपलब्ध करवाकर स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित किया जाता है, किन्तु इन योजनाओं का सही ढंग से क्रियान्वयन न हो पाने से इनका अपेक्षित लाभ नहीं मिल सका है।

Gyansindhu Classes

उपसंहार— रोजगारपरक शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा पर अब जोर दिया जाने लगा है। लघु उद्योगों एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। आशा की जानी चाहिए कि इन उपायों से बढ़ती हुई बेरोजगारी पर प्रभावी अंकुश लगाकर इस समस्या का समाधान किया जा सकेगा।

♦♦♦♦♦

Gyansindhu Classes